षष्ठ अध्याय

"आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का शिल्प सौष्ठव"

भाषा - शैली

संवाद - योजना

कहावतें, मुहावरे, लोकोक्तियां आदि

जैसा सर्वविदित है कि साहित्य में शिल्प का अत्यधिक महत्व होता है| शिल्प ही वह माध्यम है जिसके द्वारा एक रचनाकार साहित्य में अपने विचारों, अपने मनोभावों, अपने अहसासों एवं अपने हृदय की संवेदनाओं को सुव्यवस्थित, सुस्पष्ट तथा अत्यंत सुंदर रूप में व्यक्त करने का कार्य करता है| साहित्य की किसी भी विधा में चाहे वह कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि हो, यदि उसमें शिल्प न हो तो वह पाठकों के मन पर प्रभाव डालने में पूर्णतः सक्षम नहीं हो सकता है| शिल्प के अन्तर्गत कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद-कौशल, कहावतें, मुहावरे, लोकोक्तियां, देशकाल और वातावरण, भाषा-शैली एवं उद्देश्य आदि का समावेशन हो जाता है| शिल्प के द्वारा ही एक साहित्यकार अपनी रचना को सरल, सरस, हृदयग्राही एवं उच्चकोटि का बनाने में सफलता हासिल करता है|

भाषा-शैली-

मनुष्य की सार्थक व्यक्त वाणी को सामान्यतः भाषा कहते हैं| भाषा कभी रुकना नहीं जानती है। यह नदी की धारा की भांति चंचल और चलायमान होती है| यदि भाषा को कोई बलपूर्वक रोकना भी चाहे तो भाषा उसके बन्धन को तोड़कर आगे की ओर बढ़ जाती है| भारत में लोग विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते और लिखते दिखाई देते हैं| 'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ वाणी को

व्यक्त करना होता है| इसके द्वारा ही एक मनुष्य अपने मन के भावों, विचारों तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति दूसरों से करता है| हिंदी भाषा के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना' में लिखते हैं कि "सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते हैं| यह संकेत स्पष्ट होना चाहिए| मनुष्य के जटिल मनोभावों को भाषा व्यक्त करती है|"[1]

हिंदी के प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा के निम्नलिखित लक्षण बताएं हैं-

डॉ. श्याम सुन्दर के अनुसार- "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं|"[2]

मंगलदेव शास्त्री के अनुसार- "भाषा मनुष्यों की उस चेष्टा या व्यापार को कहते हैं, जिससे मनुष्य उच्चारणोपयोगी, शरीरावयवों से उच्चारण किये गए वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं|"[3]

कामता प्रसाद 'गुरु' के अनुसार- "भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकते हैं|"[4]

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी एक ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने अपनी भाषा-शैली के द्वारा कहानी साहित्य को एक नया मोड़ दिया| साहित्य में भाषा-शैली का अत्यंत महत्व होता है| भाषा-शैली के क्षेत्र में शास्त्री जी एक मँजे हुए लेखक और कलाकार के रूप में उभरकर सामने आते हैं| शास्त्री जी की भाषा स्पष्ट, सुष्ठु, सरल, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावमयी है| सरलता, सहजता तथा सप्रेषणीयता उनकी भाषा की पहचान है| उनकी भाषा में किसी भी प्रकार के भावों को अभिव्यक्त करने की अप्रतिम शक्ति है| संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी उन्होंने अपनी कहानियों की भाषा का रूप बोलचाल की सी नहीं रखा है, लेकिन वह पूर्णतः सरल एवं स्वाभाविक जरूर रहा है| अपने साहित्य में भाषा का प्रयोग करते हुए इस बात का वे निरंतर ध्यान रखते हैं कि पाठक को पढ़ने तथा समझने में किसी भी प्रकार की कोई परेशानी न हो। भाषा का प्रयोग इस तरह से सरल, स्पष्ट और हृदयग्राही हो कि वह पाठक पर मानसिक दबाव न डाले| शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग करते समय आचार्य जी हमेशा उदार रहे हैं| भावों तथा उद्देश्यों को अभिव्यक्त करने के लिये उन्होंने भाषा के तकरीबन सभी प्रकार के शब्दों यथा- तत्सम, तद्भव, देशज, हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, राजस्थानी, बुन्देली, गुजराती आदि के साथ ही साथ विदेशी भाषाओं के शब्दों से भी मुंह नहीं मोड़ा है| जहाँ जैसी आवश्यकता महसूस की, वहाँ उसी तरह की भाषा का प्रयोग अपने साहित्य में कर डाला| वे एक जगह पर बैठकर लिखने वाले लेखक नहीं

थे| देश के विभिन्न स्थानों का उन्होंने भ्रमण किया। वहाँ की जनता से रूबरू हुए। वहाँ के इतिहास, सामाजिक वातावरण एवं तत्कालीन परिस्थितियों का स्वयं आकलन किया, जिससे उस स्थान की भाषा एवं शब्दों का प्रयोग साहित्य में करना स्वाभाविक था| इनकी कहानियों में हिन्दू पात्र अधिकतर हिंदी, संस्कृत आदि भाषाएँ बोलते हुए नजर आते हैं, वहीं पर मुस्लिम पात्रों की यदि बात की जाए तो वे अधिकाँशतः अरबी-फारसी मिश्रित उर्दू भाषा का ही प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं|

बौद्ध कालीन कहानियों में पात्रों की भाषा इन सबसे अलग संस्कृतनिष्ठ ही रही है| कहीं-कहीं पालि भाषा का भी प्रयोग हुआ है| आधुनिक सामाजिक जीवन के पात्रों की भाषा प्रायः चटपटी, चलती हुई, फर्राटेदार ही दिखाई पड़ती है, जिसमें प्रचलित सभी प्रकार के शब्दों का उन्मुक्त एवं सरल भाव से प्रयोग दिखाई पड़ता है| शास्त्री जी ने अपने साहित्य में भाषा को सरस, सौन्दर्यपरक तथा आकर्षणयुक्त बनाने वाले मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों एवं कहावतों इत्यादि पर भी विशेष रूप से प्रकाश डालने का कार्य किया है| कहानियों में विशेष रूप से इन सब पर समुचित प्रकाश डालने का प्रयास किया है| कहानियों में पात्रों के मध्य जगह-जगह सुन्दर संवादों को भी यथा स्थान रखा है, जिससे पाठकों को पढ़ने में जरा-सी भी थकावट महसूस नहीं होती| उनकी कहानियों तथा उपन्यासों के पात्रों में सजीवता, स्वाभाविकता, आत्मसमर्पण की भावना, अपने देश व राष्ट्र के लिये कुछ भी कर गुजर जाने की अद्म्य साहस

और वीरता इत्यादि का अनोखा वर्णन देखने को मिलता है| कहानियों में दृश्यों, घटनाओं के परिवर्तित होने के साथ-साथ पात्रों में एक प्रकार से नवजीवन का संचार होते हुए स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है| वे पात्र किसी के सहारे पर खड़े न होकर, स्वावलम्बी बनते दिखाई पड़ते हैं। अपने स्वाभिमान और मर्यादा की सुरक्षा हेतु वे अपने प्राणों का उत्सर्ग करने में जरा सा भी संकोच नहीं करते हैं, अपितु तन-मन और पूर्ण श्रद्धा भाव से राष्ट्रहित में दुश्मनों का चुनौती पूर्ण सामना भी करते हैं|

शैली-

कहानी के क्षेत्र में शैली की उपयोगिता को परिभाषित करते हुए डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना' में लिखा है कि "शैली कहानी के कलेवर को सुसज्जित करने वाला कलात्मक आवरण होती है| इसका सम्बन्ध कहानीकार के आतंरिक और बाह्य पक्षों से रहता है| कहानी लेखक अपनी कहानी अनेक प्रकार से कहना चाहता है| वह उसे वर्णानात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक, पत्रात्मक किसी भी रूप में लिख सकता है|"[5]

कहानी की शैली ऐसी होनी चाहिए कि वह पाठक को अपनी ओर आकर्षित करे| कहानी की शैली की विशेषता को बताते हुए डॉ. वासुदेव नन्दन जी कहते हैं कि "उसकी शैली ऐसी हो जो पाठकों के मन को अपनी ओर आकृष्ट करे| यह काम भाषा शक्ति द्वारा होता है| कहानीकार की भाषा में इतनी शक्ति हो, जो साधारण पाठकों को भी अपने मोह-पाश

में बांध ले| कहानी का आरम्भ, मध्य और अन्त सुगठित हो, शीर्षक लघु और रोचक हो| अतएव कहानी की रचना एक कलात्मक विधान है, जो अभ्यास और प्रतिभा के द्वारा रूपाकार ग्रहण करती है|"[6]

जहाँ तक शैली का प्रश्न है तो शैली साहित्यकार के व्यक्तित्व का आईना होती है, जो कलाकार अथवा साहित्यकार अपने विषय का जितना अधिक जानकार होता है, उसकी शैली उतनी ही अधिक सरल, सहज और प्रेषणीय होती है| शैली मनुष्य के किसी भी कार्य को करने का एक विशेष तरीका है| बोलने व लिखने का अच्छा व विशेष ढंग ही मनुष्य की शैली कहलाता है| शैली एक प्रकार से व्यक्ति की पहचान होती है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से दूसरों तक पहुंचाता है| शैली के विचार से यदि देखा जाए तो पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र तथा आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी में जमीन और आसमान का अन्तर दिखाई पड़ता है, किन्तु शास्त्री जी 'उग्र' के ही अनुयायी समझे गए हैं|

शास्त्री जी ने भी यथार्थवाद के चक्कर में पड़कर बहुत सी कहानियों को कुरुचिपूर्ण जरूर बना दिया परन्तु कुछ भी हो यह तो हर किसी को मानना ही पड़ेगा कि वे एक उच्च कोटि के तथा बहुप्रतिभाशाली लेखक थे| एक कुशल उपन्यासकार तथा गद्य काव्य लेखक होने के कारण आचार्य जी को छोटी-छोटी कहानियां लिखने में बहुत बड़ी सहायता मिली| शास्त्री जी ने सन् 1914 ई. से लिखना प्रारम्भ किया था, तब से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक उन्होंने अपनी लेखनी को विश्राम नहीं दिया| शैली

की दृष्टि से आचार्य जी का नाम सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखकों में गिना जाता है| 'बड़ी बेगम', 'रजकण', 'अक्षत', 'मेरी प्रिय कहानियां' इत्यादि आचार्य जी की प्रमुख कहानी संग्रह हैं| इनके अतिरिक्त 'दुःखवा मैं कासे कहूँ', 'सोया हुआ शहर', 'कहानी खत्म हो गई', 'बाहर-भीतर', 'धरती और आसमान' भी प्रमुख कहानी संग्रह हैं| हास्य, करुण, वीर, एवं श्रृंगार इत्यादि भावों से सम्बन्ध रखने वाली भावनाएं उनकी सभी कहानियों एवं पात्रों में देखने को मिलती है| विषय वर्णन तो उनका अत्यंत बेजोड़ है| कहानियों में जिस काल या विषय के बारे में एक बार पढ़ लिया वह एक प्रकार से मन-मस्तिष्क में स्थायी रूप से बैठ जाता है, उसे कभी भूलते नहीं| आचार्य जी की दृष्टि स्थूल और सूक्ष्म दोनों पदार्थों की ओर लगी रहती है| पाठक का मन और हृदय इन वर्णनों के बारे में पढ़कर हिलोरें मारने लगता है| लेखक के पात्रों की भाषा व्यवहारिक एवं अकृत्रिम है, उनका लक्ष्य समाज को विकसित करना, अच्छे-बुरे की पहचान करना तथा अपनी सोई हुई शक्तियों को जगाकर किसी ऐसे पुण्य कार्य में लगाना जिससे मन और हृदय को शांति मिले| पाण्डित्य प्रदर्शन के चक्कर में वे कभी न तो पड़े, न ही कभी किसी को पड़ने देना चाहते थे| शैली की दृष्टि से देखा जाए तो उनमें निम्नलिखित प्रकार की विशेषताएँ नजर आती हैं|

1.शास्त्री जी की पहली विशेषता यह है कि जब वे अपनी कहानियों को लिखते हैं तो उस समय शब्दों के प्रयोग में यह बात ध्यान देने योग्य है कि वे शब्दों के साथ अक्सर तद्भव शब्दों को भी यथा स्थान रख देते हैं, जिससे उनकी शैली में एक अद्भुत मधुरता आ जाती है| जैसे- उछाह, लच्छन और हुलास इत्यादि शब्द|

2. आचार्य जी की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे अपनी कहानियों में मुहावरों का भी प्रयोग आवश्यकतानुसार करते चलते हैं, जिससे उन कहानियों में एक अलग प्रकार का सौन्दर्य उपस्थित हो जाता है| जैसे- 'दुखवा मैं कासे कहूँ' संग्रह के 'पतिता' नामक कहानी में आचार्य जी लिखते हैं कि 'आँख के अंधे और गांठ के पूरे होना' तथा मास्टर साहब कहानी में 'न ऊधो का लेना, न माधो का देना' इन मुहावरों के प्रयोग से कहानी में एक कौतूहल सी पैदा जाती है और पाठक का मन निरंतर कहानी में रमा रहता है, जिससे पाठक को कहानी में अंत तक नीरसता नहीं आती|

3. आचार्य जी की यह भी एक विशेषता है कि वे अपने साहित्य में मुहावरों के साथ-साथ लोकोक्तियों का भी यथोचित स्थान पर प्रयोग करने से नहीं चूकते| जैसे- 'भाई की विदाई' नामक कहानी में वे लिखते हैं कि 'नौकरी में पेट भरने जितनी तनख्वाह मिलती है जान देने जितनी नहीं', 'जोरू न जाता अल्ला मियां से नाता' इत्यादि।

4.शास्त्री जी की कहानियों में विषय के अनुरूप ही भाषा का भी स्वरूप बदलता जाता है| जैसे किसी मुसलमानी राज्य का वर्णन करते वक्त उनकी कहानियों में उर्दू और फारसी के भी शब्द पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलते हैं|

5. सभी प्रकार की कहानियों में भाषा का स्वरूप जन प्रचलित है जिसमें विभिन्न प्रकार के शब्द मिलते दिखाई पड़ते हैं।

6. यदि व्यवहारिक रूप से देखा जाए तो शास्त्रीजी की भाषा में व्यावहारिकता एवं संकोच दिखाई पड़ता है| कहानियां लिखते समय वे विभक्तियों का प्रयोग कम से कम करने का प्रयास करते हैं| भाषा की प्रगतिशीलता एवं उन्नति को देखते हुए ऐसा होना उचित भी प्रतीत होता है| जैसे- 'धनी के साथी सभी होते हैं', 'इस तरह से चुपचाप आहें भरने से तो न चलेगा'| यहाँ पहले वाक्य में विशेष्य तथा दूसरे वाक्य में कर्ता नहीं होने के बावजूद हम उनका भरपूर आनन्द महसूस कर सकते हैं|

भाषा-शैली की इन सम्पूर्ण विशेषताओं के द्वारा ही उनकी कहानियों में अत्यधिक सरलता, सहजता एवं सजीवता प्रकट हो सकी है, जिसके कारण पाठक के मन में कहानी के प्रति लगातार उत्सुकता बनी रहती है तथा कहानी को पूरा पढ़े बिना पाठक स्वयं को ठगा सा महसूस करता है| इस कारण से कहानी की मौलिकता पर भी किसी प्रकार का संदेह नहीं रह जाता है।

संवाद योजना-

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने अपनी कहानियों, उपन्यासों इत्यादि में संवाद को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है| संवाद का कहानी में विशेष महत्व होता है| संवादों के माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है| कहानीकार जिस घटना या क्रिया को कहानी में घटित होते हुए नहीं दिखा सकता, उसको संवादों के माध्यम से आसानी से प्रस्तुत कर देता है|

संवाद के लक्षण-

संवाद के माध्यम से पात्रों के चरित्र और उनके पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों का पता लगता है| संवाद देशकाल, वातावरण, परिस्थिति और घटना आदि के अनुकूल हो, संक्षिप्त हो, ध्वन्यात्मक हो तथा ऐसा लगे जैसे- पात्र सजीव रूप में उपस्थित होकर हमसे ही बात कर रहा हो, क्योंकि कहानी का रूप संक्षिप्त होता है इसलिए पात्रों के बातचीत भी संक्षिप्त होने चाहिए परन्तु एक गूँज, एक ध्वन्यात्मकता दिखाई देनी चाहिए| संवाद इस प्रकार से होने चाहिए कि वे तर्कयुक्त हों यानि कि हमारी जो जिज्ञासाएँ हैं, जो कौतूहल है वह निरंतर बनी रहे और कहानी को पढ़ने के लिए हम बाध्य हो जाएँ| पात्रों के संवाद उनके स्वभाव, परिवेश, आदर्शों और स्थितियों के अनुसार होने चाहिए जिन्हें सुनकर ही पता चल जाए कि कौन बोल रहा है? वह क्या है? उसकी पृष्ठभूमि कैसी

है? संवाद छोटे, स्वाभाविक और उद्देश्य के प्रति सीधे लक्षित होने चाहिए| संवादों में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए|

संवाद के कार्य-

कहानी में संवाद पात्रों के चरित्र को उभारते हैं| वर्णन में रोचकता एवं प्रभावशाली छाप छोड़ते हैं| वे संवाद ही होते हैं जो पहले कथावस्तु को विकास की ओर अग्रसर करते हैं| संवाद एक विशिष्ट वातावरण का निर्माण भी करते हैं, जिससे देशकाल और वातावरण, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, परिस्थिति को पूरी तरह से व्यक्त किया जा सकता है| कहानी में जो संवेदना होती है उसे भली-भांति पात्रों के संवाद योजना द्वारा ही व्यक्त किया जा सकता है| शास्त्री जी अपनी कहानियों को लिखते समय उपर्युक्त सभी बातों का विशेष ध्यान रखते हैं| उनके पात्र जब आपस में संवाद करते हैं तो परिस्थिति के अनुरूप ही उनके हाव-भाव भी होते हैं| जैसे- यदि कोई साधु पात्र संवाद कर रहा है तो उसकी भाषा भी शालीनतापरक, सभ्य तथा शान्त होती है, वहीं पर यदि कोई क्रोधी, क्रोध में संवाद करता है तो उसकी आँखें लाल, आवाज में तीव्रता तथा हाथों और पैरों से अलग प्रतिक्रियाएँ करता हुआ दिखाई पड़ता है| पात्रों के जो कथन हैं वे बड़े ही प्रभावकारी एवं पाठकों के मन मस्तिष्क पर गहरा असर छोड़ने वाले हैं| जैसा कि आचार्य जी ने अपनी 'वेश्या की बेटी' नामक कहानी में वेश्या की बेटी कामिनी और उसके प्रेमी रज्जू बाबू के बीच, संवाद का बहुत सुन्दर वर्णन किया है-

"रज्जू ने आत्म-विस्मृत होकर कहा, कामिनी, हमारा मिलना कठिन है!"

कामिनी ने आतंकित स्वर में कहा, "कठिन तो है परन्तु....."

"परन्तु क्या?....."

"तुम उसे सरल कर सकते हो|" उसके स्वर में वेदना थी|

"कैसे?" युवक ने कहा|

कामिनी बैठ गई, युवक भी बैठ गया|

कामिनी ने कहा, "बाधा क्या है? कहो!"

"तुम्हारी माँ रूपये माँगती है|"[7]

पर कहीं-कहीं आचार्य जी के संवाद संक्षिप्त होते हुए भी संख्या में इतने ज्यादा हो गए हैं कि पढ़ने समय पाठक के मन में नीरसता आने लगती है और वह ऊब जाता है| जैसे- 'बाहर-भीतर' कहानी संग्रह के 'रूठी रानी' नामक कहानी में दो पृष्ठों तक आधी-आधी पंक्तियों के ऐसे संवाद चलते आए हैं, जो न तो चरित्रोद्घाटन करने में और न ही कथा के विकास में सहायता करते हैं, न तो उसमें नाटकीयता है और न तो कोई चमत्कार ही दिखाई पड़ता है| कुल मिलाकर आचार्य जी ने अपनी कहानियों में संवाद योजना को व्यवस्थित तरीके से दिखने का प्रयास किया है| कोई पूर्णतः नहीं होता, कुछ न कुछ कमियां तो हर किसी में होती ही हैं| आचार्य जी ने अपनी कहानियों में उच्चतम प्रतिभा को दिखाने का सफल प्रयास किया है|

कहावते, मुहावरे, लोकोक्तियाँ :-

कहानियों में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है। जिस बात को सीधे शब्दों में कहने पर भी कहने वाले व्यक्ति का पूरा-पूरा भाव व्यक्त नहीं होता है, परन्तु वही बात यदि मुहावरे और लोकोक्तियों के द्वारा की जाए तो वही भाव सुचारु रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है अर्थात् जो बात हम सीधे-सीधे शब्दों के द्वारा प्रकट नहीं कर पाते हैं, उसी बात को यदि लोकोक्तियों एवं मुहावरों के द्वारा प्रयोग करके करें तो हम पूरे भाव को आसानी से प्रकट कर सकते हैं|

मुहावरा :-

मुहावरा एक वाक्यांश होता है जो साधारण अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष अर्थ का बोध कराता है| मुहावरे को परिभाषित करते हुए डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद लिखते हैं कि "ऐसा वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए, मुहावरा कहलाता है|"[8]

मुहावरे का प्रयोग करने से भाषा में सहजता, सरसता, प्रवाह और चमत्कार उत्पन्न हो जाता है| इसका मुख्य कार्य यह होता है कि किसी भी बात को इतना खूबसूरती के साथ कहना कि सुनने वाला उस बात को समझ भी ले और उससे अत्यधिक प्रभावित भी हो जाए|

मुहावरे का प्रयोग जब भी किया जाता है तो वाक्य के साथ ही किया जाता है, अलग से नहीं| जैसे- कोई कहे कि 'अंगूठा दिखाना' तो इससे कोई विलक्षण अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं होती| इसके विपरीत यदि कोई यह कहे कि अपना काम तो निकाल लिया पर जब मुझे जरूरत पड़ी तब अंगूठा दिखा दिया| भला यह भी कोई मित्र की पहचान है| मुहावरा हमेशा अपने असली रूप में रहता है, उसके स्थान पर उसका पर्यायवाची रख देने पर वह चमत्कार नहीं रह जाता|

लोकोक्ति (कहावतें) :-

लोकोक्ति लोगों के द्वारा कही गई उक्ति होती है जो प्रसिद्ध कहावत के रूप में प्रचलित है| प्राचीन समय में लोग जो कहावत कहते थे, आज भी हम उसका प्रयोग उसी रूप में करते हैं| डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना' में लोकोक्ति के विषय में लिखते हैं कि "लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है| उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, तब लोकोक्ति हो जाती है|"[9]

आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने भी अपनी कहानियों में प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियों के माध्यम से भाषा को सरल, सरस, सुस्पष्ट एवं प्रभावशाली बनाने का सफल प्रयास किया है| शास्त्री जी की कहानियों में आए हुए मुहावरे और लोकोक्तियों का विवरण निम्नलिखित है-

1. न ऊधो के लेने में, न माधो के देने में- (किसी से कोई मतलब नहीं रखना)

'मास्टर साहब' नामक कहानी में जब मास्टर साहब की पत्नी भामा, मास्टर साहब को छोड़कर किसी संस्था में चली जाती है, तो वे उस संस्था की प्रधान महिला से कहते हैं कि "हमारी छोटी सी गरीब दुनिया है, शान्त छोटा सा घर है, एक छोटे-से घोंसले के समान| हम लोग 'न ऊधो के लेने में और न माधो के देने में' विश्वास करते हैं| दिन भर मेहनत करते हैं| घर में पत्नी और बाहर पति, और रात को अपनी नींद सोते हैं|"[10]

अर्थात् वे कहते हैं कि हमारा किसी से कोई लेना देना नहीं है| हम सब अपने काम में ही व्यस्त रहते हैं|

2. पांचो उंगलियां घी में और सिर कड़ाही में- (सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना)

एक बेरोजगार व्यक्ति जब राजा साहब का प्राइवेट सेक्रेटरी बन जाता है तब उसके हाव - भाव तथा उसे मिलने वाली सुविधाओं को देखकर शास्त्री जी लिखते हैं कि "एक तो तीन साल से खाली बैठा था, दूसरे तनख्वाह बहुत काफी थी, तीसरे सुना था राजा साहब का प्राइवेट सेक्रेटरी होने से 'पांचों अंगुलियाँ घी में और सिर कड़ाही में' मैंने सोचा, दिल्लगी ही रहेगी, देखा जाएगा|"[11]

3. चाहे इधर की दुनियाँ उधर हो जाए- (अपने वचन, कर्त्तव्य, ईमान पर टिके रहना)

'सच्चा गहना' नामक कहानी में शशिभूषण के पिता के सम्बन्ध में आचार्य जी लिखते हैं कि वे ईमानदार, सभ्य नागरिक, लोगों के दुःखों में बढ़कर साथ देने वाले तथा उनके मुंह से यदि कोई बात निकल गई, तो उसे हर कीमत पर पूरा करते थे| जैसा कि आचार्य जी ने लिखा है "वह तो स्वभाव से ही दयालु और सज्जन थे| बात के ऐसे धनी थे कि एक बार जो मुंह से निकल गई तो फिरने वाली नहीं है चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए|"[12]

4. उड़ती चिड़िया को पट से गिरा दूँ- (बहुत बड़ा निशाने बाज होना)

'भाई की विदाई' नामक कहानी में जब दरोगा जी अपने नये थाने में पहुँचते हैं तो वे वहाँ के सभी लोगों पर अपनी वीरता, निशानेबाजी, अपनी शक्ति की धाक दिखाने में जुट गये| "दरोगा जी डाकुओं को पकड़ने के लिए उत्सुक दीख पड़ते थे| अभी तक अच्छी मुहिम से उनका वास्ता न पड़ा था| उन्हें अपनी निशानेबाजी पर बड़ा नाज था| कहा करते थे कि उड़ती चिड़िया को पट से गिरा दूँ| सिपाही उन्हें खूब बनाते| तारीफ के पुल बांध देते|"[13]

5. जिगर पर तीर खाकर चला आया- (किसी की सुन्दरता या प्रेम में खोकर घायल हो जाना)

'तिकड़म' कहानी में रामनाथ अपनी प्रेमिका का वर्णन दोस्तों से करते हुए कहता है कि "सब दोस्तों ने उसे रोककर कहा- चुप रहो भाई! बकवाद न करो| जरा सुनने तो दो| हां जी, उस तिकड़म की बात कहो अब| वही तो कह रहा हूँ| उस वक्त तो मैं जिगर पर तीर खाकर चला आया|"[14]

6. दिल्ली की आबो हवा खराब है- (वहां की परिस्थिति ठीक न होना)

रामनाथ अपनी प्रेमिका के प्यार में पड़कर, अपनी ही बीवी को दिल्ली से गाजियाबाद में रहने का प्रबन्ध कर देता है ताकि उसकी बीवी को उसके प्रेम संबंध के बारे में पता ना चले। वह अपनी बीवी से कहता है कि तुम गाजियाबाद में ही रहो, क्योंकि "दिल्ली की आबो हवा खराब है|"[15]

7. आपत्तियों के बादल उमड़ आते थे- (बहुत बड़ी परेशानियों से घिर जाना)

'चौधरी सिंह' कहानी में शास्त्री जी चौधरी सेढू सिंह की शक्तियों तथा उसकी लोगों के प्रति धाक के सम्बन्ध में कहते हैं कि "जो उनके आदेश का उल्लंघन करता था, न जाने कहां से उस पर आपत्तियों के बादल उमड़ आते थे|"[16]

8. जान बची और लाखों पाए- (मुसीबत से बच निकलना)

'राजा साहब का प्राइवेट सेक्रेटरी' नामक कहानी में जब वह राजा साहब का प्राइवेट सेक्रेटरी, राजा साहब की अच्छी तरह से स्टेशन पर रहने की उचित व्यवस्था न कर सका तो उसे अपनी नौकरी पर टिके

रहने का खतरा महसूस हुआ किन्तु जब राजा साहब वहां से वापस अपने महल में पहुँचते हैं तो उसकी सारी कमियों को नजर अंदाज करते हुए उसकी पीठ ठोंकते हैं| तब जाके उस सेक्रेटरी को "जान बची और लाखें पाए जैसी अनुभूति हुई|"[17]

9. पूरब के देहाती जरा बेढब होते हैं- (निराला होना)

'तिकड़म' कहानी में जब मि. रामनाथ अपने दोस्त की शादी में सम्मिलित होने के लिए औरंगाबाद जाते हैं तो वह अपने दोस्तों से कहते हैं कि मुझे छुट्टी नहीं मिल रही थी, मगर होनी थी सो खींच लाई| इस पर उसके दोस्त कहते हैं कि ऐसी होनी तो हम लोगों के साथ कभी नहीं होती "तुम हो तिकड़म बाज, कहीं उलझ पड़े होगे और चांद गरमा गई होगी, लो हमने कह दिया| पूरब के देहाती जरा बेढब होते हैं|"[18]

10. बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय- (जो हो गया है उसकी चिंता करने के बदले हमें आगे के बारे में सोचना चाहिए)

'सुखदान' कहानी में जब विद्यानाथ की पहली पत्नी का निधन हो जाता है तो वे उसकी छोटी बहन सुषमा से विवाह करते हैं, जो कि उम्र में उनसे बहुत छोटी होती है, उसके साथ सामंजस्य बैठाने में विद्यानाथ कुछ असहज महसूस करते हैं| उनके ससुर जी एक दिन उनसे कहते हैं कि जो हुआ सो हुआ अब "बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय|"[19]

11. रस्सी जल गई, पर ऐंठन बाकी है- (बर्बाद होने पर भी अकड़ना)

'राजा साहब की कुतिया' नामक कहानी में एक बार जब राजा साहब की कुतिया, पड़ोस के किसी दूसरे राजा साहब के कुत्ते के घर चली जाती है तो राजा साहब का सेक्रेटरी, उस पड़ोसी राजा से अपनी कुतिया वापस मांगता है परन्तु पड़ोसी राजा भले ही उस समय अपने राज्य श्री को खो चुके थे, पर कुतिया उसे वापस करने से साफ इनकार कर देते हैं। तब वह सेक्रेटरी बड़े ताव के साथ उस पड़ोसी राजा से कहता है कि "वाह राजा साहब रस्सी जल गई, पर ऐंठन अभी बाकी है|"[20] अर्थात् आपका साम्राज्य वगैरह सब कुछ लुट गया परन्तु अभी भी आप बड़े ताव के साथ कहते हैं कि मैं आपकी कुतिया को वापस न करूँगा|

12. नौकरी में पेट भरने जितनी तनख्वाह मिलती है, जान देने जितनी नहीं- (जान से बढ़कर नौकरी का न होना)

'भाई की विदाई' कहानी में जब नए दरोगा जी अपने साथियों से डाकुओं को आसानी से पकड़ लेने की बात करते हैं, तब उनका एक साथी कमालुद्दीन दरोगा जी को समझाते हुए कहता है कि "हुजूर आपके बाल बच्चे हैं, आप नौजवान हैं, नौकरी में पेट भरने जितनी तनख्वाह मिलती है, जान देने जितनी नहीं, आप पहली बार मुहिम पर आए हैं| वे लोग पक्के खिलाड़ी हैं| आप मतलब से मतलब रखिये वरना यहां से जीता जागता लौटना मुश्किल है|"[21]

13. साँप मरे और लाठी भी न टूटे-(काम भी हो जाए और नुकसान भी न हो)

'भाई की विदाई' कहानी में जब दरोगा जी ने डाकुओं को पकड़ने के लिये कमालुद्दीन से पूछा कि लूटपाट के बाद जाप्ते की कार्यवाही कैसे होगी तो कमालुद्दीन कहता है कि "वह सब मैं अर्ज करूँगा| आप देखते रहिए| वह तरकीब काम में लाऊँगा कि सांप मरे और लाठी भी न टूटे|"[22]

14. चिड़िया का शिकार करना और डाकू से लड़ना एक ही बात नहीं- (हर कार्य को एक समान नहीं मापा जा सकता|)

'भाई की विदाई' कहानी में जब दरोगा जी ने कमालुद्दीन से यह सुना कि बदमाश पक्के और निशानेबाज डकैत हैं| वे लोग न जाने कितने पुलिस वालों को गोली से उड़ा चुके हैं तो दरोगा जी को यह अच्छी तरह से आभास हो गया कि "चिड़िया का शिकार करना और डाकू से लड़ना एक ही बात नहीं हैं|"[23]

15. जोरू न जाता अल्ला मियां से नाता- (जो संसार में अकेला हो, जिसके कोई न हो)

'शराबी की बात' नामक कहानी में जब बादशाह जहांगीर एक शराबी की तरह नगर में घूमते हुए यह मालुम करना चाहते हैं कि जनता उनके बारे में क्या सोचती है? वे टहलते - टहलते एक सिकन्दर नामके जुलाहे के पास पहुँचते हैं। वह उस समय खूब शराब पी रहा था| बादशाह भी उसके साथ शराब पीते हैं और उस जुलाहे से पूछते हैं कि "सच कहो

दोस्त, घर में बीवी-बच्चे भी हैं या फकत दम ही? जुलाहा जोर से हँसा फिर बोला- बीबी- बच्चे तो बाप के भी नहीं थे यार। यहाँ तो जोरू न जाता, अल्ला मियां से नाता, पियो दोस्त तुम क्यों तकल्लुफ करते हो|"[24]

इस प्रकार आचार्य जी ने विभिन्न मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से अपनी कहानियों की भाषा में चार चाँद लगा दिया है। परिणाम स्वरूप कहानियों में एक अनोखा सौन्दर्य प्रस्फुटित हो गया है और पाठक पूरी कहानी को एक ही बार में पढ़ने के लिये उत्साहित हो उठता है| जरा सा भी वह कहानियों के प्रति उदासीन नहीं होता, क्योंकि उन कहानियों में उत्कृष्ट संवाद, पात्रों का चयन तथा भाषा में सरलता, स्पष्टता एवं प्रभावशीलता का अनोखा संगम दिखाई पड़ता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नन्दन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन, पृष्ठ 271
2. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नन्दन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन, पृष्ठ 2
3. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नन्दन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन, पृष्ठ 2
4. पाण्डेय, सरस्वती, हिंदी भाषा एवं साहित्य का वतुनिष्ठ इतिहास, 2014, इलाहबाद, अभिव्यक्ति प्रकाशन, पृष्ठ 1
5. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नन्दन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन, पृष्ठ 392
6. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नन्दन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन, पृष्ठ 392
7. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, बड़ी बेगम (वेश्या के बेटी), 2016, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 73-74
8. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नन्दन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन, पृष्ठ 271
9. प्रसाद, डॉ. वासुदेव नन्दन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, 1993, नई दिल्ली, भारती भवन, पृष्ठ 284

10. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (मास्टर साहब), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 230

11. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (राजा साहब का प्राइवेट सेक्रटरी), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 109

12. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, बड़ी बेगम (सच्चा गहना), 2016, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 62

13. शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (भाई की विदाई), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 83

14. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (तिकड़म), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 93

15. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (तिकड़म), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 93

16. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (चौधरी), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 76

17. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (राजा साहब का प्राइवेट सेक्रटरी), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 113

18. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (तिकड़म), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 91

19. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (सुख-दान), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 56

20. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर (राजा साहब की कुतिया), 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 119

21. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (भाई की विदाई), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 87

22. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (भाई की विदाई), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 88

23. 'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई (भाई की विदाई), 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, पृष्ठ 87

24. शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं (शराबी की बात), 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 35